सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का दशम् अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। डॉ. नीलम द्वारा लिखित **भारतीय इतिहास में पाण्डुलिपियों का महत्त्व एवं इतिहास लेखन में उनकी भूमिका"** लेख में भारतीय इतिहास लेखन में उपयोग की गई प्रमुख पाण्डुलिपियों का सम्पूर्ण विश्लेषण दिया है। शुभम कुमार सिंह द्वारा लिखित **"ज्ञान परम्परा और संस्कृति का अमूल्य खजाना: पाण्डुलिपियाँ** लेख में भारतीय परम्परा में पाण्डुलिपियों के महत्व को स्पष्ट किया है। डॉ. कृष्ण मुरारी जैमिन द्वारा लिखित **आयुर्वेद पाण्डुलिपि के सन्दर्भ में एक अध्ययन "** लेख में भारतीय चिकित्सा परम्परा में आयुर्वेद के महत्त्व को स्पष्ट करते हुये पाण्डुलिपियों को आयुर्वेद चिकित्सा के ज्ञान का भण्डार कहा है। पारुल खंडेलवाल द्वारा लिखित **सूचना सिद्धांत में विचलन माप का विश्लेषण "** लेख में सूचना सिद्धांत का परिचय देते हुए विचलन माप के लाभ, सीमाएँ और भविष्य की संभावनाओं को वर्णित किया है। मिताली कुमावत द्वारा लिखित **" हस्तलिखित ग्रन्थों की परंपरा में अर्थशास्त्र'** लेख में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में पाण्डुलिपियों की महत्ता पर प्रकाश डाला है। डॉ. अनीता व्यास द्वारा लिखित **पाण्डुलिपियों का महत्त्व'** लेख में पाण्डुलिपियों का ऐतिहासिक महत्त्व बताते हुए आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पाण्डुलिपि महत्ता को प्रतिपादित किया है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा